

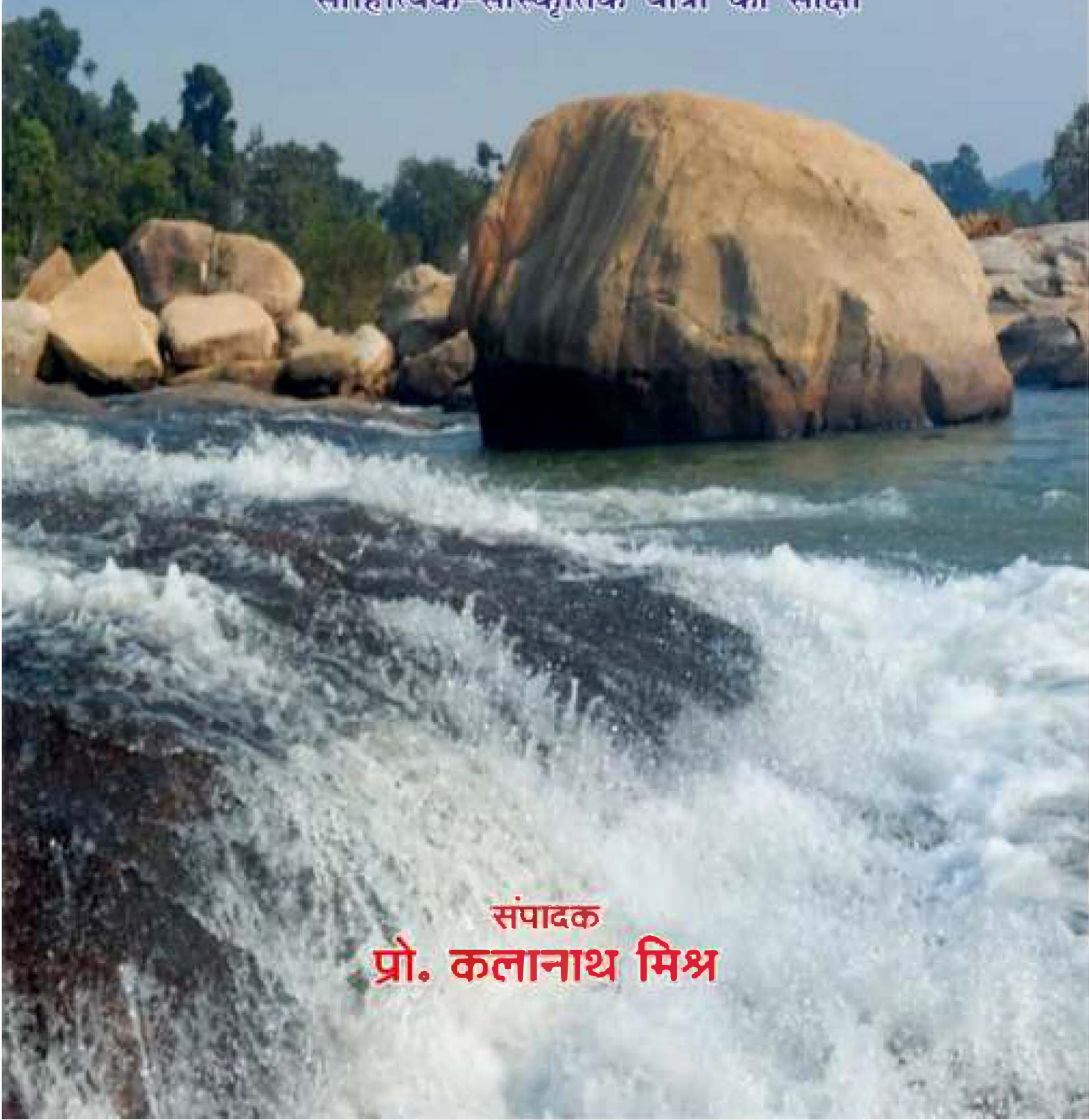
साहित्य

ISSN 2349-1906

वर्ष 8 अंक 30-31 अप्रैल-सितम्बर 2022

यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा की साक्षी



संपादक

प्रो. कलानाथ मिश्र

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

संपादक

प्रो० कलानाथ मिश्र

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

सदस्यता फार्म

‘साहित्य यात्रा’ विशिष्ट सदस्यता	:	1100/-
एक वर्ष (4 अंक)	:	500/- (डाक खर्च सहित)
तीन वर्ष (12 अंक)	:	1500/- (डाक खर्च सहित)
संस्थागत मूल्य (3 वर्ष)	:	1500/-
आजीवन सदस्यता	:	15000/-
विदेश के लिए (3 अंक)	:	60 डॉलर

(पटना के बाहर के चेक पर कृपया बैंक कमीशन के 40/- रुपये अतिरिक्त जोड़ दें।)

उक्त दर के अनुरूप मैं चेक / ड्राफ्ट संलग्न कर रहा हूँ। ऑन लाईन खाते में डाल दिया हूँ (रेफरेन्स नं०) कृपया मुझे ग्राहक बना कर मेरी प्रति निम्न पते पर भिजवाएँ।

नाम :-	पद :-
पता :-	
दूरभाष 1 :	दूरभाष 2 :
शहर :	पिन न० :-
देश :	ईमेल -
संकाय / विभाग / विद्यालय:	

भुगतान की जानकारी

नकद/बैंक रकम: रु०..... द्वारा.....

डी0डी0/प्रत्यक्ष हस्तांतरण/चेक/बैंक का नाम :.....

डी0डी/चेक/स्थानान्तरण संख्या :..... दिनांक :.....

दिनांक:		हस्ताक्षर (या पूरा नाम लिखें)	
---------	--	----------------------------------	--

ऑनलाइन हस्तांतरण विवरण :- साहित्य यात्रा, पंजाब नेशनल बैंक,
एस.के. पुरी शाखा, पटना-1

खाता क्रमांक- 6236000100016263, IFSC- PUNB0623600

वेबसाइट - www.sahityayatra.com



यहाँ से काटिए



साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

वर्ष-8

अंक-30-31

अप्रैल-सितम्बर, 2022

परामर्शी

डॉ० सूर्य प्रसाद दीक्षित

डॉ० प्रेम जनमेजय

डॉ० हरीश नवल

डॉ० संजीव मिश्र

सम्पादकीय सलाहकार

श्री आशीष कंधवे

उप-संपादक

प्रो० (डॉ०) प्रतिभा सहाय

डॉ० सत्यप्रिय पाण्डेय

सहायक संपादक

डॉ० रवीन्द्र पाठक

डॉ० करुणा पीटर 'कमल'

अमित कुमार मिश्र

साज-सज्जा

निशिकान्त / मनोज कुमार

संपादक

प्रो० कलानाथ मिश्र



साहित्य यात्रा में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं जिनसे संपादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पत्रिका से जुड़े किसी भी व्यक्ति का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का निपटारा पटना क्षेत्र के अन्तर्गत सीमित है। पत्रिका में संपादन से जुड़े सभी पद गैर-व्यावसायिक एवं अवैतनिक है।

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

RNI No. : BIHHINO5272

ISSN 2349-1906

विश्व विद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा पूर्व अनुमोदित

विद्वत् संपादक मंडल द्वारा समीक्षित

© स्वत्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के पुनः उपयोग के लिए लेखक,
अनुवादक अथवा साहित्य यात्रा की स्वीकृति अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय

‘अभ्युदय’

ई-112, श्रीकृष्णपुरी

पटना-800001 (बिहार)

मोबाइल : 8434880332/09304302308/09835063713

ई-मेल : sahiyayatra@gmail.com

kalanath@gmail.com

वेब साईट : <http://www.sahityayatra.com>

मूल्य : ₹ 100/- (एक सौ रुपये मात्र)

प्राप्ति स्थान :

पटना-

आलोक कुमार सिंह, मैग्जीन हाउस, शालीमार स्टूडियो के पास,
सहदेव महतो मार्ग, बोरिंग रोड, पटना-800001

दिल्ली -

1. आर.के. मैग्जीन सेन्टर, क्रिश्चियन कॉलोनी, पटेल चेस्ट,
दिल्ली, वि.वि., दिल्ली-11007
 2. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, मंडी हाउस, नई दिल्ली
-

शुल्क ‘साहित्य यात्रा’ के नाम पर भेजें।

‘साहित्य यात्रा’ त्रैमासिक डॉ॰ कलानाथ मिश्र के स्वामित्व में और उनके द्वारा ‘अभ्युदय’
ई-112, श्रीकृष्णपुरी, पटना-800001, बिहार से प्रकाशित तथा ज्ञान गंगा क्रियेशन्स, पटना
से मुद्रित। स्वामी/संपादक/प्रकाशक/मुद्रक : प्रो॰ कलानाथ मिश्र।

अनुक्रम

संपादकीय	07
बातचीत	
ख्यातिलब्ध कथा लेखिका चित्रा मुद्गल के साथ डॉ. कलानाथ मिश्र की अंतरंग बातचीत	15
आलेख	
खुद एक लोकगीत बन गए सत्यार्थी जी प्रकाश मनु	42
सीता की प्रतीति डॉ. मंगलमूर्ति	56
राजी सेठ : मनुष्य की अप्रतिहत जिजीविषा डॉ. वेद प्रकाश अमिताभ	63
लीलाधर मंडलोई की कविता चुनौती भरे समय में एक सार्थक वक्तव्य डॉ. व्यास मणि त्रिपाठी	69
साक्षात्कार	
डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर के साथ डॉ. गायत्री देवी की बातचीत डॉ. गायत्री देवी जे. लालवानी	78
आलेख	
हिन्दी साहित्य में महिलाएँ सुधा गोयल	84
राहुल सांकृत्यायन : साहित्य का महापण्डित शंकर लाल माहेश्वरी	88
सृजन, विसर्जन का वृंदगान : असाध्य वीणा कृष्ण बिहारी पाठक	92
कालजयी 'कालिदास' और महावीर प्रसाद द्विवेदी डॉ. प्रभात कुमार मिश्र	99
यशोधरा में राहुल का स्थान तथा गुप्त जी का संदेश डॉ. शशिभूषण प्रसाद सिंह	111
संस्मरण	
आलोचक डॉ. नंदकिशोर नवल की कविता में प्रेम पंडित विनय कुमार	117

आलेख

नए दौर में नए तरीके से हो साहित्य पत्रकारिता 126

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

लोक साहित्य में बिखरी लोक संस्कृति 129

बृजेश आनन्द राय

कहानी

यूट्रेस 146

डॉ. रंजना जायसवाल

कविता

नदी हूँ मैं 152

सुमेधा पाठक

आलेख

शमशेर की कवितओं में रूप, रंग, गंध और स्पर्श की अभिव्यक्ति 155

डॉ. अर्चना त्रिपाठी

पुस्तक समीक्षा

सच्चिदानंद प्रेमी का काव्य संग्रह 'कैसे गीत गाऊँ' 161

डॉ. करुणा पीटर 'कमल'

अन्तस की पुकार 166

राम किशोर सिंह विरागी

आलेख

'गीता महाबोध' का दर्शन 170

डॉ. हरeram सिंह

'राष्ट्र की प्रगति में साहित्य का योगदान' 175

रूमन कुमारी

साहित्यिक खबर

मीठेश निर्माही साहित्य अकादेमी 184

आलोक रावल

रिपोर्ट

'आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, महाकवि सुमित्रानन्दन पंत एवं 186

आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री की पावन स्मृति पर संगोष्ठी'

डॉ. सदानन्द प्रसाद गुप्त

पूर्वोत्तर भारत के अध्यात्म, कला, साहित्य, संस्कृति और फोटोग्राफी 190

के केन्द्र थे हरिलाल कुंज जी : पूर्णिमा मनाई गई श्री हरिलाल कुंज की जन्मशती-समारोह

प्रकृति के चितरे पंत

“छोड़ द्रुमों की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले तेरे बाल—जाल में,
उलझा दूँ मैं कैसे लोचन।

इस वर्ष 5 जून को पर्यावरण दिवस के अवसर पर पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के अन्तर्गत जेडी विमेंस कॉलेज एवं विश्व संस्कृत हिन्दी परिषद् दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में “साहित्य और पर्यावरण” विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। अध्यक्षता प्रसिद्ध कवि ‘आलोक धन्वा’ कर रहे थे। मुझे पंत का प्रकृति प्रेम विषय पर विशिष्ट वक्ता के रूप में बोलना था। प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत जी का प्रकृति प्रेम से सराबोर व्यक्तित्व एवं काव्य पर व्याख्यान के बाद भी मन में विचार आता रहा व उक्त पंक्तियाँ सहसा मेरे मानस पटल पर उभर आईं। उनका प्रकृति के प्रति जो अनुराग है वह भावुक करनेवाला है। और उनका यही प्रकृति प्रेम मुझे इस बार का संपादकीय उनपर लिखने के लिए प्रेरित कर रहा है। अतः यह संपादकीय पंत और प्रकृति के नाम। वैसे तो हिन्दी साहित्य का प्रत्येक काल प्रकृति चित्रण से परिपूर्ण है। किन्तु छायावाद के अग्रणी कवि पंत जी ने जिस तरह प्रकृति को देखा, आत्मसात किया, वह अद्भुत है।

पंत जी प्रकृति प्रेम से इतने अभिभूत थे कि उन्होंने नारी सौंदर्य के आकर्षण को भी प्राकृतिक सौंदर्य के सामने गौण मान लिया था। उन्होंने किसी किशोरी के बाल जाल में अपने नयनों को उलझाने की चाह की थी किन्तु वे वृक्षों की छाया को छोड़कर प्रेयसी के केशों में उलझना स्वीकार नहीं कर सके। यौवनावस्था में पंत जी के मन को उषा, फूल, नदी, निर्झर आदि सदैव अपनी ओर आकर्षित करते रहे।

मेरे विद्यार्थी जीवन में मेरे गुरु प्रोफेसर अनंत लाल चौधरी ने पंत जी को समझाने के लिए मेरे नोट्स पर एक पंक्ति लिखी— ‘प्रकृति के प्रति पंत का प्रेम जन्मना है, नारी उनके जीवन में उसके बाद आती है।’ पंत जी के व्यक्तित्व को समझने में ये पंक्ति अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। आज चार दशक बाद भी जब लिखने बैठा हूँ तो वही पंक्ति आधार बना है। पंत ने अपने काव्यों में प्रकृति का केवल चित्रण ही नहीं किया है, उन्होंने प्रकृति को जिया है, हर सांस में उसे महसूस किया है। प्रकृति और पंत में एक नैसर्गिक संबंध है। इसीलिए पंत जब